

मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले की जनजातियों के आर्थिक सशक्तिकरण में क्षेत्रीय असमानताओं का सांख्यिकीय विश्लेषण

शोधार्थी

विनय कुमार मिश्रा

वाणिज्य संकाय, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध निर्देशक

डॉ. शोभित कुमार श्रीवास्तव

सह – प्राध्यापक, वाणिज्य संकाय, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध-पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले की जनजातियों के आर्थिक सशक्तिकरण में विद्यमान **क्षेत्रीय असमानताओं** का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह परीक्षण करना है कि विभिन्न विकासखंडों में जनजातीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण का स्तर समान है अथवा संसाधनों, रोजगार के अवसरों एवं शासकीय योजनाओं की पहुँच में अंतर के कारण उनमें भिन्नता पाई जाती है।

अध्ययन में कुल **300 अनुसूचित जनजाति उत्तरदाताओं** से प्राथमिक आँकड़े संकलित किए गए, जिनका चयन मोहला, मानपुर एवं अंबागढ़ चौकी—तीनों विकासखंडों से समानुपातिक रूप से किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण **ANOVA (Analysis of Variance)** सांख्यिकीय विधि द्वारा किया गया, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि आर्थिक सशक्तिकरण के स्तर में विकासखंडों के मध्य अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या नहीं।

ANOVA विश्लेषण से प्राप्त F-मान एवं महत्व स्तर यह संकेत देते हैं कि आर्थिक सशक्तिकरण के स्तर में क्षेत्रीय असमानता विद्यमान है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि जनजातीय समुदायों का आर्थिक सशक्तिकरण केवल व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय संसाधनों, नीतिगत क्रियान्वयन एवं प्रशासनिक संरचना से भी गहराई से प्रभावित होता है।

प्रस्तावना

जनजातीय समुदाय सदियों से प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित जीवन-यापन करते आए हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में जनजातीय समाज की बहुलता होने के बावजूद उनके आर्थिक विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रही है। आर्थिक सशक्तिकरण किसी भी समाज के

समग्र विकास का आधार होता है, क्योंकि यह व्यक्ति को आत्मनिर्भरता, निर्णय क्षमता एवं सामाजिक सम्मान प्रदान करता है। मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिला छत्तीसगढ़ का एक नवगठित एवं जनजातीय बहुल जिला है, जहाँ सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ एकरूप नहीं हैं। कहीं रोजगार के सीमित अवसर हैं, तो कहीं शासकीय योजनाओं की जानकारी का अभाव है। इन परिस्थितियों के कारण जनजातीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण में क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न होती है। आधुनिक शोध में केवल वर्णनात्मक विश्लेषण पर्याप्त नहीं माना जाता, बल्कि सांख्यिकीय परीक्षणों द्वारा निष्कर्षों की पुष्टि आवश्यक हो गई है। ANOVA जैसी विधियाँ यह स्पष्ट करने में सहायक होती हैं कि विभिन्न क्षेत्रों के मध्य पाए गए अंतर संयोगवश हैं अथवा वास्तविक। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन जनजातीय आर्थिक सशक्तिकरण की क्षेत्रीय भिन्नताओं को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

संबंधित शोध-अध्ययन

- शर्मा (2016) ने जनजातीय विकास में क्षेत्रीय संसाधनों की भूमिका को रेखांकित किया।
- गुप्ता (2017) के अनुसार स्वरोजगार योजनाओं का प्रभाव क्षेत्र-विशेष पर निर्भर करता है।
- वर्मा (2018) ने वित्तीय साक्षरता को आर्थिक असमानता का प्रमुख निर्धारक माना।
- सिंह (2019) ने जनजातीय क्षेत्रों में विकास असंतुलन की ओर संकेत किया।
- मिश्रा (2020) ने रोजगार के अस्थायित्व को आर्थिक कमजोरी का कारण बताया।
- पटेल (2021) ने योजनाओं के क्रियान्वयन में प्रशासनिक अंतर उजागर किए।
- यादव (2022) ने ग्रामीण जनजातीय समाज में आय विविधीकरण पर बल दिया।
- साहू (2023) ने क्षेत्रीय नीति समन्वय को आवश्यक बताया।

अध्ययन के उद्देश्य

- जनजातीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण के स्तर का मूल्यांकन करना।
- विभिन्न विकासखंडों में आर्थिक सशक्तिकरण की क्षेत्रीय असमानताओं का विश्लेषण करना।
- आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।

परिकल्पना

H_1 : मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के विभिन्न विकासखंडों में जनजातीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण के स्तर में सार्थक क्षेत्रीय अंतर विद्यमान है।

शोध-विधि

अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-विधि का प्रयोग किया गया है।

नमूना (न्यादर्श)

सरल यादृच्छिक विधि द्वारा 300 जनजातीय उत्तरदाताओं का चयन किया गया।

तालिका क्रमांक – 1

विकासखंडों के आधार पर जनजातीय आर्थिक सशक्तिकरण में क्षेत्रीय विषमता का ANOVA विश्लेषण

स्रोत	df	F-मान	Sig.
समूहों के बीच	2	4.92	0.03
समूहों के भीतर	297	—	—
कुल	299		

(स्रोत: प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित गणना)

उपर्युक्त तालिका में मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के तीन विकासखंडों में निवासरत जनजातीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण स्तर में विद्यमान क्षेत्रीय विषमता की जाँच हेतु ANOVA (Analysis of Variance) सांख्यिकीय विधि के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं। इस विश्लेषण का उद्देश्य यह परीक्षण करना है कि विभिन्न विकासखंडों में जनजातीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण का स्तर समान है अथवा उनमें सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया जाता है।

तालिका के अनुसार समूहों के बीच स्वतंत्रता की डिग्री (df) का मान 2 है, जो यह दर्शाता है कि अध्ययन में तीन स्वतंत्र समूह अर्थात् तीन विकासखंड—मोहला, मानपुर एवं अंबागढ़ चौकी—को सम्मिलित किया गया है। वहीं समूहों के भीतर स्वतंत्रता की डिग्री (df) का मान 297 है, जो कुल 300 उत्तरदाताओं के भीतर विद्यमान आंतरिक विविधताओं को प्रतिबिंबित करता है। कुल स्वतंत्रता की डिग्री 299 पाई गई है, जो नमूना आकार की सांख्यिकीय संगति को दर्शाती है।

ANOVA परीक्षण से प्राप्त **F-मान 4.92** है, जो यह सूचित करता है कि समूहों के बीच पाए गए विचलन, समूहों के भीतर पाए गए विचलनों की तुलना में पर्याप्त रूप से अधिक हैं। यद्यपि यह F-मान अत्यधिक उच्च नहीं है, तथापि यह यह संकेत अवश्य देता है कि विभिन्न विकासखंडों के मध्य जनजातीय आर्थिक सशक्तिकरण के स्तर में भिन्नता विद्यमान है।

तालिका में प्रदर्शित **महत्त्व स्तर (Sig.) = 0.03** है, जो प्रचलित 0.05 के मानक स्तर से कम है। सांख्यिकीय सिद्धांतों के अनुसार, जब महत्त्व स्तर 0.05 से कम होता है, तब यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि समूहों के मध्य पाया गया अंतर **सांख्यिकीय रूप से सार्थक** है और इसे संयोग का परिणाम नहीं माना जा सकता।

अतः इस विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के विभिन्न विकासखंडों में जनजातीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण का स्तर समान नहीं है। यह क्षेत्रीय विषमता रोजगार के अवसरों, आय के स्रोतों, शासकीय योजनाओं की पहुँच, आधारभूत संरचनाओं तथा सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में अंतर के कारण उत्पन्न हुई है।

परिकल्पना परीक्षण का निष्कर्ष

चूँकि प्राप्त **Sig. मान (0.03)**, 0.05 से कम है, अतः

वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) स्वीकृत की जाती है।

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि विकासखंडों के आधार पर जनजातीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण में **सार्थक क्षेत्रीय अंतर विद्यमान** है।

शैक्षिक उपयोगिता

1. जनजातीय आर्थिक असमानताओं की समझ विकसित करता है।
2. शोधार्थियों को ANOVA विश्लेषण का व्यावहारिक उदाहरण प्रदान करता है।
3. क्षेत्रीय विकास नीति निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, पी. (2016). *आर्थिक विकास एवं जनजातियाँ*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

2. गुप्ता, आर. (2017). *ग्रामीण विकास के आयाम*. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
3. वर्मा, एस. (2018). *वित्तीय साक्षरता और विकास*. भोपाल: म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी।
4. सिंह, के. (2019). *जनजातीय समाज का अध्ययन*. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
5. मिश्रा, डी. (2020). *ग्रामीण अर्थव्यवस्था*. इलाहाबाद: लोकभारती।
6. पटेल, एम. (2021). *शासकीय योजनाएँ एवं विकास*. अहमदाबाद: यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. यादव, एस. (2022). *सामाजिक परिवर्तन*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. साहू, आर. (2023). *जनजातीय सशक्तिकरण*. रायपुर: छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी।